सुन्दरसाथ (DIVINE FRIENDS)

काफी दिन पूर्व एक बार फिर किसी परिचित के यहाँ जाने का संयोग बना तो उनके ड्राइंग रूम की दीवार पर टंगे एक चित्र पर अकस्मात नजर गई, वहाँ लिखी एक ही पंक्ति दिल को छू गई "Friends are flowers in garden of life" अर्थात दोस्त हमारे जीवन की बगिया के फूल के सदृश होते हैं। दोस्ती के प्रति इतना स्पष्ट और ऊँचा भाव हृदय पटल पर एक छाप सी छोड़ गया और बार-बार विचारों को एक चिन्तन दे गया। क्या दोस्ती जीवन की इतनी ऊँची प्राप्ति है कि जीवन को सुवासित कर दे ? सच्ची दोस्ती क्या है? क्यों होती है? कैसे होती है? बहुत से प्रश्न भी साथ-साथ जुड़ने लगे। मूल बिन्दु से जब चिन्तन विस्तार की ओर जाने लगा तो धीरे-धीरे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर भी समय के साथ प्राप्त होने लगा। दोस्ती दो या दो से अधिक व्यक्तियों के आपस के दिल के मिलने का एक बंधन है। जब कुछ एक जैसे लोग, एक जैसी विचार धारा के मिलते हैं तो शनैः शनैः उनका एक दूसरे से बार-बार मिलने का दिल करता है, एक दूसरे को देखने की इच्छा होती है और धीरे-धीरे सम्बन्ध प्रगाढ़ता की ओर बढ़ते जाते हैं। धीरे-धीरे यह साथ सुन्दर और सुखदायी होता चला जाता है और हम "सुन्दरसाथ" Divine Friends बन जाते हैं।

अब महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि दोस्ती क्या हम उम्र वालों से हुआ करती है या आयु का अन्तर भी हो सकता है ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि आयु का कोई विशेष अन्तर नहीं होता केवल सोच-विचार की समानता ही दोस्ती की मूल बुनियाद हुआ करती है। दोस्ती के बीच बंधन चूंकि प्रेम का रहा करता है अतः इसमें अहम और टकराव जैसे कोई शब्द हो ही नहीं सकते। इसलिये इस बन्धन को अलौकिक बन्धन या आत्मिक बंधन भी कहा जा सकता है। जहाँ प्रेम होता है वहाँ दिल समर्पित रहता है और श्रद्धाभावों की प्रधानता रहा करती है। शब्दों का बहुत सशक्त माध्यम न भी हो तो भी कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। दोस्ती के मध्य बंधन प्रेम, एकता समर्पण का होता है।

आज के अर्थप्रधान, भौतिकता से भरपूर कलयुग ने हमारी शारीरिक और मानसिक शक्तियों को क्षीण कर दिया है और हम साधनों के रहते हुए भी अकेले हो रहे हैं। आवश्यकता है इन परिस्थितियों में नये ढंग से तालमेल बिठाने की, अनुकूलता लाने की ताकि नये-नये लोगों का आगमन जीवन को नया परिवर्तन और आकर्षण प्रदान करें क्योंकि आज के बीमार मानव को पहले से कहीं अधिक सुख और शांति के स्त्रोत की आवश्यकता है। जब तक हमारा मन बोझिल होगा चिन्तन कदापि स्वच्छ नहीं होगा। प्रदर्शन दिखावा, इन सबसे हटकर सादगी, सौम्यता, भाई-चारा और प्रेम का परस्पर लेनदेन सम्बन्धों को अधिक प्रभावशाली

Nijanand App

प्रभावशाली बनाता है और परिणाम स्वरूप हमारे जीवन में नई स्फुर्ति, नई उमंग और नया जोश आसपास बिखरा हुआ स्पष्ट दिखता है। अपने शुभ-चिन्तकों, मित्रों के साथ वार्तालाप करते हुए हम महसूस करते हैं कि आज जीवन में न कोई अभाव है, न कोई रिक्तता और न ही कोई शून्यता। हमारी ब्रह्मवाणी साक्षी है कि इस संसार में जुदा-जुदा होकर रहने वाली ब्रहात्माओं को आज श्यामा महारानी नें सुन्दरसाथ के रूप में एकत्रित कर दिया है। आज उनकों अपने असल प्रेम की पहचान हो गई है कि हम सुन्दरसाथ अंग ही सुन्दरबाई के हैं और उनकी मेहेर भरी नज़र में सतगुरू बन कर हमारे मन-चित्त, बुद्धि और अहंकार को पाक साफ कर दिया है।

अरस मिलावा ले चली, अपने संग सुभान।
किया चाहया सब दिल का, आंगू आए लिए मेहरबान।। *सागर-१५/१२६*

आज आवश्यकता है कि हम सब सुन्दरसाथ का एक विचार, एक भाव और चिन्तन एक ही हो और हम एक ही प्रेम के सुदृढ़ बन्धन में बंध जायें। संसार इसी को दोस्ती कहता है और हम वाहेदत कहते हैं। परमधाम में जो-जो आत्माओं ने चाहा था, सब श्री राजजी ने दिखलाया और उनकी हर अभिलाषा को पूरा किया। इस अखण्ड वाणी को लाकर संसार के सारे दुःखों को मुक्त करके खुद अपनी मेहेर भरी नज़र से चितवन द्वारा परमधाम का साक्षात्कार करवाया। मोमिनों का यही दिव्य आहार बन जाता है। उनका मरातबा तो देखिये कि वे सच्चे पारब्रह्म की मित्रता से अपनी प्यास बुझाते हैं। इसी में उन्हे अखण्ड सुख-चैन प्राप्त होता है। प्रमाण देखें :-

करना दीदार हक का, एही मोमिनों काम।
पानी पीवना दोस्ती हक की, इनों एही सुख आराम।। *सिन -२३/६६*

सन्देश भी दिया कि भरतखण्ड में, कलयुग में, जागृत बुद्धि की कुलजम स्वरूप साहिब जी की वाणी और प्राणनाथ जी का आगमन हो चुका है और वो पूर्ण पारब्रह्म अपने सुन्दरसाथ की जमात को दुःखों से मुक्त करके अखण्ड सुखों को देने आ गये हैं। अब यह निर्णय सुन्दरसाथ के स्वयं के हाथ में है कि अपने जीवन को किस प्रकार से परिवर्तित करके सुवासित करें कि श्री मुखवाणी यानि श्री राजजी महाराज के विचार ही हमारे विचार बन जायें और हम एक रूप, एक रस होकर आठों पहर भीगे रहें। हम केवल शब्दों के द्वारा ही सुन्दरसाथ को प्रणाम न कह कर बल्कि प्रत्येक के अन्दर बैठे आत्म स्वरूप को भी नतमस्तक होकर प्रणाम कहें। तभी हम श्री श्यामा महारानी सुन्दरबाई के सुन्दर अंग कहे जायेगें और अपने को सही मायनों में सुन्दरसाथ कह पायेंगे। 'धामदर्शन' परिवार के समस्त सुन्दरसाथ को प्रणाम के साथ।

- नीरु खुराना, कानपुर

Nijanand App